



अर्चना गुप्ता

प्राथमिक शिक्षा पर मिड-डे मील का प्रभाव

शोध अध्येत्री- समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ०प्र०) भारत

Received-17.12.2024,

Revised-25.12.2024,

Accepted-29.12.2024

E-mail : guptakarchna@gmail.com

सारांश: शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। विशेषकर प्राथमिक शिक्षा बच्चों के जीवन में वह नींव तैयार करती है, जिस पर आगे की समस्त शैक्षिक एवं सामाजिक उपलब्धियाँ टिकी होती हैं। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ गहरी हैं, वहाँ शिक्षा की सार्वभौमिक उपलब्धता सुनिश्चित करना सदैव चुनौतीपूर्ण रहा है। बच्चों के स्कूल में नामांकन के साथ-साथ उनकी उपस्थिति और निरंतरता सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर 'मिड-डे मील योजना' लागू की।

कुंजीभूत शब्द- जनजाति समाज, हिन्दू धर्म, समान अधिकार, दया, प्रेम, अपनत्व, सर्वोपरि, शिक्षा, व्यवसाय, जीवन शैली

'मिड-डे मील योजना' योजना केवल पोषण उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार, बाल श्रम की रोकथाम, छात्र-छात्राओं के बीच लैंगिक और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने और गरीब तबकों को शिक्षा की ओर आकर्षित करने का एक सशक्त साधन है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा पर मिड-डे मील योजना के विविध प्रभावों का विश्लेषण करना है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

- भारत में बच्चों के लिए विद्यालयों में भोजन उपलब्ध कराने की परिकल्पना नई नहीं है।
- 1960 के दशक में कुछ दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश) में प्राथमिक स्तर पर बच्चों को गर्म भोजन उपलब्ध कराने की पहल हुई।
- 1982 में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. जी. रामचंद्रन ने पूरे राज्य में 'मिड-डे मील' योजना का विस्तार किया।
- 1995 में भारत सरकार ने 'राष्ट्रीय पोषण समर्थन योजना' के रूप में इसे पूरे देश में लागू किया।
- 2001 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद सभी सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों में पके हुए भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की गई।
- 2004 में इसका नाम बदलकर 'राष्ट्रीय कार्यक्रम दृष्टि प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को पोषाहार (मिड-डे मील)' कर दिया गया।
- 2019 में इसे 'पीएम पोषण शक्ति निर्माण योजना' नाम से विस्तारित कर दिया गया।
- इस प्रकार यह योजना भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

योजना की प्रमुख विशेषताएँ-

1. **लक्ष्य समूह:** कक्षा 1 से 8 तक के छात्र-छात्राएँ।
2. **भोजन:** पका हुआ, गर्म भोजन, जिसमें कैलोरी और प्रोटीन की निश्चित मात्रा सुनिश्चित की जाती है।
3. **प्रति दिन लाभ:** प्राथमिक कक्षाओं (1-5) के लिए 450 कैलोरी व 12 ग्राम प्रोटीन, जबकि उच्च प्राथमिक (6-8) के लिए 700 कैलोरी व 20 ग्राम प्रोटीन।
4. **वित्त पोषण:** केंद्र और राज्य सरकारें संयुक्त रूप से।
5. **सामाजिक सहभागिता:** स्थानीय समुदाय, अभिभावक, स्वयंसेवी संगठन एवं विद्यालय प्रबंधन समितियाँ।

प्राथमिक शिक्षा पर मिड-डे मील के प्रभाव-

1. **नामांकन एवं उपस्थिति में वृद्धि:**
 - मिड-डे मील का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव विद्यालयों में नामांकन दर पर पड़ा है।
 - गरीब तबकों के अभिभावक बच्चों को विद्यालय भेजने में अधिक रुचि लेने लगे।
 - राष्ट्रीय शैक्षिक सर्वेक्षण (वैम् रिपोर्ट) के अनुसार योजना लागू होने के बाद प्राथमिक स्तर पर नामांकन अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
 - ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय छोड़ने की दर (व्रतचवनज तंजम) में कमी आई है।
2. **बच्चों के पोषण स्तर में सुधार:**
 - यह योजना बच्चों के कुपोषण को कम करने का प्रमुख साधन बनी।
 - आयर्न, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट की पर्याप्त मात्रा से बच्चों के शारीरिक विकास में सकारात्मक असर पड़ा।
 - राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो की रिपोर्ट बताती है कि मिड-डे मील प्राप्त करने वाले बच्चों में औसत वजन और ऊँचाई में सुधार देखा गया।
3. **शैक्षिक उपलब्धियों पर असर:**
 - भूख की स्थिति में बच्चे पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। भोजन मिलने से उनकी एकाग्रता और सीखने की क्षमता बढ़ी।
 - विभिन्न अध्ययनों में पाया गया कि इस योजना से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की परीक्षा परिणामों में सुधार हुआ है।
4. **सामाजिक समानता को बढ़ावा:**
 - एक ही स्थान पर सभी जातियों और वर्गों के बच्चे एक साथ भोजन करते हैं।
 - इससे सामाजिक भेदभाव और अस्पृश्यता की प्रवृत्तियों में कमी आई।
 - लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा मिला, क्योंकि परिवारों ने उन्हें भी विद्यालय भेजना शुरू किया।



5. महिला सशक्तिकरण:

- रसोइया और सहायिका के रूप में स्थानीय महिलाओं को रोजगार के अवसर मिले।
- अधिकांशतः ग्रामीण, गरीब और दलित वर्ग की महिलाएँ इस योजना में कार्यरत हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ।

6. बाल श्रम में कमी:

- मुफ्त भोजन मिलने से गरीब परिवारों ने बच्चों को काम पर भेजने की बजाय विद्यालय भेजना उचित समझा।

7. सामुदायिक भागीदारी:

- अभिभावक, ग्राम पंचायत और स्थानीय संस्थाएँ विद्यालय गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हुईं।
- इससे शिक्षा प्रणाली पर विश्वास बढ़ा।

चुनौतियाँ और समस्याएँ—

1. **गुणवत्ता एवं स्वच्छता की समस्या:** कई बार भोजन की गुणवत्ता खराब होने, विषाक्तता (फूड पॉइजनिंग) और स्वच्छता के अभाव की घटनाएँ सामने आईं।
 2. **वित्तीय अनियमितताएँ:** खाद्यान्न वितरण और व्यय में भ्रष्टाचार की शिकायतें।
 3. **सामाजिक भेदभाव:** कुछ क्षेत्रों में अभी भी ऊँच-नीच और जातिगत भेदभाव देखने को मिलता है, जैसे दलित बच्चों के लिए अलग पंक्ति।
 4. **बुनियादी ढाँचे की कमी:** कई विद्यालयों में भोजन पकाने के लिए रसोई, स्वच्छ पेयजल और बर्तन उपलब्ध नहीं हैं।
 5. **पोषण संतुलन का अभाव:** भोजन में विविधता का अभाव रहता है, जिससे बच्चों को आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व (Micronutrients) पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाते।
 6. **प्रबंधन की चुनौतियाँ:** भोजन सामग्री की आपूर्ति, समय पर वितरण और निगरानी प्रणाली में कमजोरियाँ।
- #### सुधार के उपाय—
1. **भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित करना:** नियमित निरीक्षण, पोषण विशेषज्ञों की सलाह और आधुनिक रसोई गृह।
 2. **सामुदायिक निगरानी:** ग्राम पंचायत एवं माता-पिता की निगरानी समिति सक्रिय हो।
 3. **पोषण विविधता:** हरी सब्जियाँ, दालें, अंडे, दूध और फल शामिल किए जाएँ।
 4. **तकनीकी सहयोग:** खाद्यान्न वितरण और खर्च पर ई-गवर्नेंस प्रणाली लागू करना।
 5. **स्वास्थ्य जाँच:** नियमित रूप से बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण।
 6. **शिक्षकों की भागीदारी:** विद्यालय प्रबंधन और शिक्षकों को भोजन व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
 7. **स्थानीय स्रोतों का उपयोग:** स्थानीय स्तर पर उत्पादन और खरीदी से न केवल ताजगी और गुणवत्ता बनी रहेगी, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।

प्राथमिक शिक्षा पर दीर्घकालिक प्रभाव—

- शिक्षा के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण।
- अगली पीढ़ी के लिए स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा में सुधार।
- मानव संसाधन विकास को गति।
- राष्ट्रीय विकास और उत्पादकता में वृद्धि।

निष्कर्ष— मिड-डे मील योजना ने भारत की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा प्रदान की है। यह केवल एक पोषण कार्यक्रम नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक समानता और महिला सशक्तिकरण से जुड़ा एक बहुआयामी प्रयास है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस योजना ने नामांकन, उपस्थिति, पोषण स्तर और शैक्षिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण सुधार किया है। यद्यपि इसमें अनेक चुनौतियाँ हैं, किन्तु उचित निगरानी, गुणवत्ता सुधार और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

इस प्रकार मिड-डे मील योजना ने शिक्षा के सार्वभौमिकरण और सामाजिक न्याय की दिशा में एक सशक्त उपकरण के रूप में कार्य किया है और आने वाले समय में भी यह भारत की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली की मजबूती का आधार बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ministry of Education, Government of India. Annual Report on Mid-Day Meal Scheme.
2. Dreze, Jean & Goyal, Aparajita (2003). Future of Mid-Day Meals in India. Economic and Political Weekly.
3. Government of India (2006). National Programme of Nutritional Support to Primary Education: Guidelines.
4. PROBE Team (1999). Public Report on Basic Education in India. New Delhi: Oxford University Press.
5. Ramachandran, Vimala (2009). Mid-Day Meals: A Grassroots View. Economic and Political Weekly.
6. UNICEF (2014). The Impact of School Meals on Education and Nutrition.
7. Jha, Jyotsna & Dhir Jhingran (2005). Elementary Education for the Poorest and Other Deprived Groups.
8. योजना आयोग (भारत सरकार), विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएँ।
9. Supreme Court of India, Right to Food Case Judgments (2001 onwards).
